इकाई 1 केंद्रीय समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा
1.3 असीमित इच्छाएँ तथा सीमित संसाधन
1.4 दुर्लभता तथा चयन
1.5 चयन की समस्या : एक उदाहरण
    1.5.1 अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का अर्थ
    1.5.2 एक और व्याख्या
1.6 वास्तविक एवं आदर्श अर्थशास्त्र
1.7 सारांश
1.8 शब्दावली
1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के भलीभाँति अध्ययन से आप समझ पाएँगे कि :

- किसी व्यक्ति तथा समाज के लिए एक आर्थिक समस्या का क्या अर्थ है?
- इच्छाएँ क्या हैं, तथा उन्हें पूरा करने के लिए उचित संसाधन क्या हो सकते हैं?
- एक उत्पादन संभावना (सीमा) वक्र क्या होता है?
- उत्पादन संभावना वक्र द्वारा अर्थशास्त्र में चयन की समस्या किस प्रकार समझाई जा सकती है?
- चयन समस्या कैसे सुलझाई जा सकती है? तथा
- वास्तविक अर्थशास्त्र एवं आदर्श अर्थशास्त्र में क्या भेद है?

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई का उद्देश्य एक अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र की परिभाषा करना है। अर्थशास्त्र की परिभाषा कोई बहुत सहज कार्य नहीं है। इसमें वह सभी कठिनाइयाँ सामने आती हैं जो अर्थशास्त्र की पहली ही कक्षा में अर्थशास्त्र का परिचय कराने के प्रयास में अनुभव होती है। यही समझ नहीं आता कि कहाँ से शुरू करें और क्या बताएँ? क्या शुरुआत औपचारिक परिभाषा से की जाए या फिर यह बताया जाए कि अर्थशास्त्र में क्या कुछ आता है? प्रायः शुरुआत परिभाषा से की जाती है। लेकिन इसमें कठिनाई यह है कि अर्थशास्त्र की कोई भी एक ऐसी परिभाषा नहीं है जिस पर सबकी सहमति हो। सभी अर्थशास्त्री अपने-अपने ढंग से ही अर्थशास्त्र की परिभाषा करते हैं। सभी अपनी परिभाषा को सही और उपयुक्त समझते हैं। वास्तव में अर्थशास्त्र को पहली बार पढ़ रहे छात्रों के साथ न्याय तो तभी हो पाएगा जब हम उन्हें

यह बता सकें कि आखिर अर्थशास्त्र क्या है किसके बारे में, इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हम एडम स्मिथ, अल्फ्रेड मार्शल अथवा जे.एम.केन्स की परिभाषाओं को न बताकर लॉयनेल रोबिन्स की परिभाषा को स्पष्ट करना चाहेंगे।

1.2 अर्थशास्त्र की परिभाषा

लॉयनेल रोबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों तथा वैकल्पिक प्रयोगों वाले सीमित संसाधनों के बीच संबंधों के रूप में मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है। आइए देखें कि रोबिन्स ने अपनी परिभाषा में किन बातों पर बल दिया है? उनका सबसे महत्त्वपूर्ण विचार तो यह है कि इस विषय के अंतर्गत हम मानवीय व्यवहार का अध्ययन करते हैं। यह कहा जा सकता है कि ऐसे तो कई अन्य शास्त्र अथवा विषय हैं जो किसी न किसी तरह मानवीय व्यवहार के अध्ययन से जुड़े हैं जैसे समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और राजनीति शास्त्र आदि। इन विषयों में भी व्यक्तियों के व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवहार का ही अध्ययन होता है। पर अर्थशास्त्र में हम आर्थिक गतिविधियों से जुड़े मानवीय व्यवहार पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखते हैं। जैसे एक विद्वान का कहना है, "अर्थशास्त्र का मानवीय व्यवहार के अध्ययन का अपना विलक्षण अंदाज है जो इसे अन्य सामाजिक शास्त्रों से भिन्न स्वरूप प्रदान करता है। रोबिन्स का अपना कथन ही इस बात को स्पष्ट कर देता है। अर्थशास्त्र उद्देश्यों की प्राप्ति के निमित्त सचेत प्रयास के रूप में मानवीय व्यवहार की व्याख्या करता है।"

1.3 असीमित इच्छाएँ तथा सीमित संसाधन

अर्थशास्त्र का आरम्भ ही मानवीय इच्छाओं, अभिलाषाओं और आवश्यकताओं से होता है। इतिहास के हर चरण में लोगों की इच्छाएँ तथा आवश्यकताएँ अवश्य रही हैं। इनमें से कुछ तो जीवित रहने की बुनियादी आवश्यकताएँ कही जा सकती है, जैसे रोटी, कपड़ा और मकान आदि। यह भी कहा जा सकता है कि मानवीय आवश्यकताओं का उदगम् शरीर से जुड़ा हुआ हैं पर व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाए तो हमारी अधिकतर आवश्यकताएँ समाज में मिलकर रहने से ही उत्पन्न होती है। समाज का अस्तित्व ही हमारी अधिकतर आवश्यकताओं का आधार हैं समाज की संस्कृति में निहित जटिल कारक इन आवश्यकताओं का निर्धारण करते हैं। हर समाज की भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का स्वरूप भी समाज की सभ्यता एवं संस्कृति ही सुनिश्चित करती है। अतः हम कह सकते हैं कि यद्यपि आवश्यकताएँ शरीर से जुड़ी हैं लेकिन उनका स्वरूप मानवीय समाज ही निर्धारित करता है। इन मानवीय आवश्यकताओं की एक अन्य विलक्षणता यह है कि ये बार-बार पैदा होती रहती है। उदाहरण के लिए एक बार भोजन कर लेने से भूख कुछ समय के लिए ही मिटती है लेकिन कुछ समय बाद फिर लगती है। लोग चाहते हैं कि उनकी आवश्यकताएँ, अभिलाषाएँ और आकांक्षाएँ पूरी हों तथा इसी उद्देश्य से सभी मानवीय गतिविधियाँ प्रेरित होती हैं। इस तरह से अर्थशास्त्र मानवीय लक्ष्यों, उद्देश्यों तथा उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग द्वारा इनकी प्राप्ति से जुड़ा है। ये प्राप्ति निजी भी हो सकती हैं और सामूहिक भी। उदाहरण के लिए यदि आपको कुछ ठंडा पीने की इच्छा है तो आपके पास पैसा होना जरूरी है। घर बनाने के लिए ईंट, सीमेंट, इस्पात, लकड़ी व शीशे आदि की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार गेहूँ का उत्पादन तभी संभव हो पाएगा जब उपयुक्त ज़मीन के साथ बीज, उर्वरक और सिंचाई के लिए जल भी सुलभ हों। इन सभी उदाहरणों में आप उद्देश्य तथा संसाधन की स्पष्ट रूप से पहचान कर सकते हैं। एक अन्य उदाहरण पर गौर करें : आप काम पर पहुँचने के लिए अपनी कार से जाते है; आप काम पर पैसा कमाने की खातिर जाते हैं; और संभव

है कि पैसा आप नई कार खरीदने के लिए कमाना चाहते हों। इन सभी से यह बात तो स्पष्ट है कि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें संसाधनों की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न 1

1) यदि आपकी मासिक आय एक हजार रुपया हो तो कुछ ऐसी जैविक आवश्यकताएँ बताइए जिनकी पूर्ति का प्रयास आप पहले करेंगे? (दूसरे शब्दों में, कुछ ऐसी वस्तुओं के नाम बताइए जिन्हें आप जीवन के लिए आवश्यक मानते हैं)।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आप जमीन के एक टुकड़े पर गन्ने की खेती करना चाहते हैं। उत्पादन प्राप्ति के लिए आप किन-किन संसाधनों का प्रयोग करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 दुर्लभता तथा चयन

रोबिन्स की परिभाषा में मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों की दुर्लभता पर बल दिया गया है। फिर भी यह प्रश्न उठता है कि आखिर इस दुर्लभता का इतना महत्व क्यों है? अर्थशास्त्र में इस दुर्लभता का अर्थ आवश्यकताओं की तुलना में साधनों का सीमित होना है। दूसरे शब्दों में, (किसी व्यक्ति या समाज की) आवश्यकताओं तथा संसाधनों के बीच अन्तराल ही 'दुर्लभता' है और इसी के परिणाम स्वरूप किसी आर्थिक समस्या का जन्म होता है। यहीं पर रोबिन्स की परिभाषा के एक और पहलू पर ध्यान दिलाना आवश्यक है। किसी आवश्यकता की संपूर्ति के लिए काम आने वाले संसाधन केवल इसी काम आ सकते हों, ऐसा नहीं है। इन संसाधनों के अनेक प्रयोग हो सकते हैं। एक संसाधन अनेक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, इस इकाई के लेखन में अब तक मैं अपने कीमती समय का एक घंटा लगा चुका हूँ। यह समय एक संसाधन है तथा हर व्यक्ति के पास यह सीमित होता है। यदि मैं यह लेखन कार्य न कर रहा होता तो शायद रतन टाटा पुस्तकालय (देहली स्कूल ऑफ इक्नॉमिक्स) जाकर व्यष्टि अर्थशास्त्र की किसी नई पुस्तक को पढ़ रहा होता; या फिर किसी पुस्तक भण्डार में नई आयी किताबों में अपनी पसन्द की कोई पुस्तक ढूँढ़ रहा होता। या फिर मैं शायद टेलीविज़न पर कोई रोचक कार्यक्रम देखता या उससे चाहे किसी फिल्म के बारे ही सही, नई जानकारी पाने का प्रयास करता। यह तो आप समझ ही गए होंगे कि समय का प्रयोग कितने कार्यों के लिए किया जा सकता है। वैसे यहाँ इतना जान लेना ही पर्याप्त है कि प्रत्येक दुर्लभ संसाधन का एक से अधिक कार्यों में प्रयोग हो सकता है।

अतः हम कौन सा कार्य करें इसका चयन कर सकने की भरपूर गुंजाइश हमारे पास है। किसी भी एक कार्य में अपने सीमित साधन लगाने का अर्थ यह भी होता है कि हम इसे किसी अन्य कार्य में लगाकर जो लाभ पा सकते थे अब नहीं पाएँगे। अर्थशास्त्र का केवल दुर्लभता से ही संबंध नहीं है। यह हमें चयन करने में भी सहायक हो सकता है क्योंकि एक साधन के एक से अधिक उपयोग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम अपनी आय फलों तथा आइसक्रीम पर खर्च कर डालते हैं, तो रोटी तथा मक्खन नहीं खरीद पाएँगे। यदि अर्थव्यवस्था खनिज तेल का प्रयोग बिजली घरों में कर लेती है तो वह तेल वाहन चलाने के लिए सुलभ नहीं रह पाता। यदि आप अपना जितना समय अर्थशास्त्र के अध्ययन में लगा रहे हैं तो वह समय आप पैसा कमाने में नहीं लगा पाएँगे।

"इसी में अर्थशास्त्र का सार निहित है। जब किसी व्यक्ति (या समूह) के संसाधन उसकी सभी माँगों को एक साथ ही पूरा करने के लिए पर्याप्त सिद्ध नहीं होते तो अर्थशास्त्र अपने अस्तित्व में आता हैं अर्थशास्त्र दुर्लभ साधनों के श्रेष्ठतम प्रयोग में निहित चयन के साथ जुड़ा हुआ है। यदि साधनों की दुर्लभता नहीं हो तो फिर अर्थशास्त्र का अस्तित्व भी नहीं। नोट करें कि इस बात का सच होना कि मानवीय आवश्यकताएँ असीमित हैं, आवश्यक नहीं है। संभवतः वे असीमित हैं। फिर भी इस सच्चाई को परखने के लिए कि 'आवश्यकताएँ असीमित हैं' अनुसंधान की गुंजाइश है। आर्थिक समस्या को जानने के लिए तो केवल इतना ही समझना आवश्यक है कि साधन आवश्यकताओं की तुलना में दुर्लभ अर्थात् कम पड़ रहे हों।" (David Whynes : *Invitation to Economics*, पृष्ठ 15)।

बोध प्रश्न 2

1) यदि आप कुछ पाना चाहते हो वह प्राप्त कर सकने की स्थिति में भी हो तो क्या सही अर्थों में आपको चयन की समस्या का सामना करना पड़ेगा?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपने घर से काम करने की जगह पर जाने के लिए आप परिवहन के किन-किन माध्यमों के बीच चुनाव कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 चयन समस्या : एक उदाहरण

साधनों एवं आवश्यकताओं के बीच असंतुलन से ही आर्थिक समस्याएँ पैदा होती हैं। इसी असंतुलन से यह प्रश्न पैदा होता है कि संसाधनों का लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्ततम प्रयोग किस प्रकार

हो? किसी भी व्यक्ति एवं समाज के लिए विभिन्न (प्रतियोगी) उद्देश्यों के बीच सीमित संसाधनों का विभाजन करना एक अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण या केंद्रीय समस्या है। यदि संसाधन इतने काफी होते कि उन्हें बचाकर रखना जरूरी न रहता या फिर विभिन्न लक्ष्यों के बीच किसी तरह का टकराव नहीं हो, तो फिर समाज को किसी आर्थिक समस्या का सामना ही नहीं करना पड़ता। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। संसार को न तो संसाधनों की बहुलता का उदार वरदान मिला है और न ही उनके और लक्ष्यों के बीच का संतुलन समाप्त हो पाया है। यह बात जहाँ सोमालिया, इथोपिया, वोलिविया, बंगलादेश, अल्बानिया आदि पिछड़े हुए देशों पर तो लागू होती ही है, संयुक्त राज्य अमेरीका, जर्मनी और जापान जैसे समुन्नत देश भी इसके दायरे से बाहर नहीं रह पाते। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि साधनों की सीमितता के दो स्वरूप हैं : स्थानीय तथा विश्वव्यापी। कभी-कभी किसी देश की संपन्नता ऐसा भ्रम-जाल पैदा कर देती है कि जैसे इन देशों में दुर्लभता नाम की कोई समस्या नहीं रह गई है। पर यह बात वास्तव में सच नहीं होती। हर समाज में ऐसी संस्थाएँ होती है जो सीमित संसाधनों के उचित बँटवारे की दिशा में कार्य करती हैं और इन संस्थाओं को ही समाज का आर्थिक ढाँचा या अर्थव्यवस्था का नाम दिया जाता है। ये ही अर्थव्यवस्था में निर्णय करती हैं कि किस वस्तु का उत्पादन कैसे हो तथा किसके लिए हो?

एक उत्पादन संभावना वक्र दो वस्तुओं के उन विभिन्न जोड़ों को दर्शाता है जिनका कोई फर्म उत्पादन कर सकती है, यदि

i) वह फर्म तकनीकी दृष्टि से उत्पादन की कुशलतम विधि का प्रयोग करे;
ii) संसाधनों का आर्थिक दक्षतापूर्ण आवंटन करे; तथा
iii) सभी संसाधनों का पूर्ण प्रयोग करे।

यह वक्र हमें बताता है कि यदि एक वस्तु का उत्पादन दिया गया हो तो हम दूसरी वस्तु का कितना अधिक से अधिक उत्पादन कर सकते हैं, यदि प्रौद्योगिकी तथा संसाधनों की मात्रा में कोई परिवर्तन न हो। इससे हमें यह ज्ञान होता है कि संसाधनों को एक उद्योग से दूसरे में स्थानांतरित कर किस दर पर एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु का उत्पादन किया जा सकता है? यह हमें बताता है कि किस प्रकार खाद्य पदार्थों के स्थान पर कपड़े का उत्पादन किया जा सकता है। यानि साधनों का स्थानांतरण करके किस प्रकार एक वस्तु के उत्पादन स्तर में परिवर्तन करके दूसरी वस्तु के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। इसी दृष्टि से उत्पादन संभावना वक्र को रूपातंरण वक्र (transformation curve) भी कहा जाता है। (देखिए रेखाचित्र 1.1)

चित्र 1.1

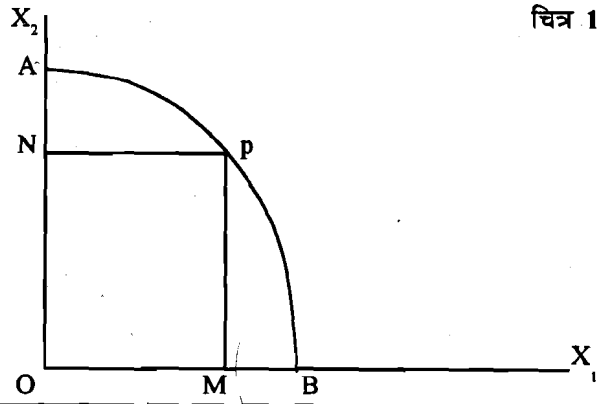

चित्र 1.1 : यदि समाज साधनों का कुशलतापूर्वक प्रयोग केवल X वस्तु के उत्पादन के लिए करें तो इस वस्तु का OB मात्रा में उत्पादन हो सकता है। इसी तरह केवल X_2 का उत्पादन करने की दशा में OA मात्रा उत्पादित होगी। वक्र AB दोनों वस्तुओं के उन सभी जोड़ों को दर्शाती है जिनका उत्पादन किया जा सकता है। यदि समाज बिंदु P पर उत्पादन करना चाहे तो X_1 की OM तथा X_2 की ON मात्रा का उत्पादन होगा। हम यह भी कह सकते हैं कि यदि समाज X_1 का उत्पादन OM मात्रा में करना चाहे तो वह X_2 की ON मात्रा का ही उत्पादन कर पाएगा।

उत्पादन संभावना वक्र के प्रयोग द्वारा हम अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याओं को समझाने का प्रयास भी कर सकते हैं। हमारी पहली समस्या है कि क्या उत्पादन किया जाए? मान लीजिए कि दो वस्तुएँ X_1 तथा X_2 हैं। इनमें से X_1 उपभोक्ता वस्तु तथा X_2 पूँजीगत वस्तु हैं। सैम्युलसन के अनुसार उत्पादन संभावना वक्र समाज का 'चयन पत्र' है। आर्थिक संसाधन तो सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। अतः समाज को यह कठिन निर्णय तो लेना ही पड़ेगा कि X_1 का अधिक उत्पादन किया जाए या फिर X_2 का उत्पादन बढ़ाने में ज्यादा संसाधन लगाए जाएँ या फिर दोनों के बीच कोई संतुलन रखा जाए। यह संभव है कि भारत जैसे विकासशील देश में पूँजी के आधार को बढ़ाने के लिए देश में पूँजीगत वस्तुओं पर अधिक बल दिया जाए। इसी प्रकार, मज़बूत पूँजीगत आधार वाले जापान जैसे देश में उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन को अधिक बल दिया जा सकता है। (देखिए चित्र 1.2)

चित्र 1.2

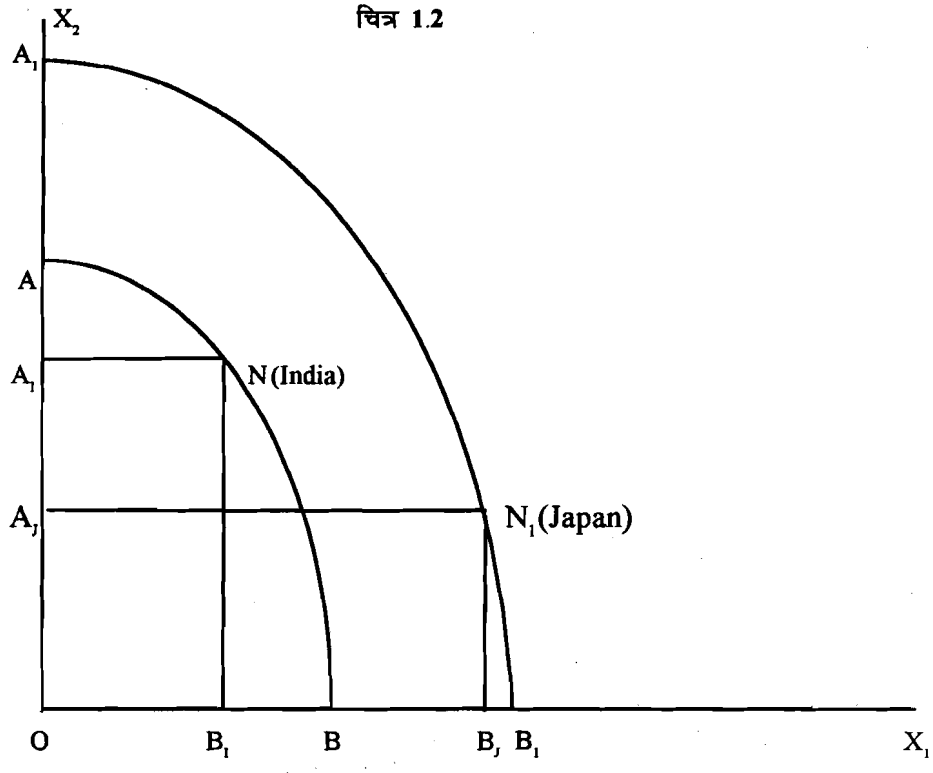

चित्र 1.2 : भारत A_1B_1 संयोजन में पूँजीगत एवं उपभोक्ता पदार्थ उत्पादित कर सकता है और जापान A_JB_J में। ध्यान दें कि जापान के संयोजन में उपभोक्ता वस्तु की बहुलता है जबकि पूँजीगत पदार्थ की मात्रा काफी सीमित रहती है।

इसी प्रकार उत्पादन संभावना वक्र द्वारा दूसरी केंद्रीय समस्या, अर्थात् कैसे उत्पादन किया जाए, पर भी प्रकाश डाला जा सकता है। वस्तु के उत्पादन के लिए संसाधन सम्मिश्रण का चुनाव ही उत्पादन तकनीक का चयन है। पर यह बात उत्पादन संभावना वक्र से सीधे-सीधे समझ पाना संभव नहीं होता। वस्तुतः हमें उस दक्षता पथ **(efficiency locus)** का पुनः अवलोकन करना पड़ेगा जिसके आधार पर हम उत्पादन संभावना वक्र का निर्माण करते हैं। मान लीजिए वस्तु X_1 श्रम प्रधान तकनीक से बनती है तथा X_2 पूँजी प्रधान तकनीक से। भारत का उत्पादन संभावना वक्र AB है। अब यदि इस पर N बिन्दु पर कार्य हो रहा हो तो यह स्पष्ट है कि यहाँ पूँजीगत वस्तुओं का अधिक उत्पादन हो रहा है। अब क्योंकि ये वस्तुएँ पूँजी प्रधान तकनीक से बनी हैं तो हम कह सकते हैं कि भारत में पूँजी प्रधान तकनीक का चलन अधिक है। दूसरी ओर, जापान के उत्पादन संभावना वक्र A_1, B_1, N_1 बिंदु पर उपभोक्ता वस्तुओं की प्रधानता दर्शाता है। पर इससे यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि जापान में श्रम प्रधान तकनीक का चलन अधिक है। जापान जैसे देश में तो

वस्तुतः उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन भी पूँजी प्रधान तकनीकों द्वारा ही होता है। अतः उत्पादन संभावना वक्र द्वारा उत्पादन तकनीकों के विषय में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करना कठिन है।

हमारी तीसरी केंद्रीय समस्या है : किसके लिए उत्पादन किया जाए? इसी को वितरण की समस्या भी कहा जाता है। इस समस्या के समझने के लिए भी उत्पादन संभावना वक्र का सहारा लिया जा सकता है लेकिन अप्रत्यक्ष तौर पर ही। यदि हम यह मान लें कि समाज में आय के वितरण में जितनी अधिक विषमताएँ होंगी उतनी ही विलासिता की वस्तुओं (जैसे कार, रंगीन टी.वी., फ्रिज आदि) की माँग अधिक होगी। विलासिता की वस्तुओं का उत्पादन प्रायः पूँजी प्रधान तकनीक से होता है। इस दृष्टि से चित्र 1.2 में भारत का उत्पादन बिंदु N हैं। यहाँ आय के बँटवारे की व्यापक विषमता को भी दर्शाया जा सकता है। अभी कुछ देर पहले हमने भारत में पूँजी प्रधान तकनीक से बनी वस्तुओं के उत्पादन की प्रधानता को एक विकासमान देश की आवश्यकता के नाम पर उचित ठहराया था। अतः जब तक हमें यह पता न हो कि X_2 अक्ष पर कौन-सी पूँजी प्रधान तकनीक से बनी वस्तुएँ दिखाई गई है हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। यदि ये वस्तुएँ उत्पादन करने वाली मशीनें आदि हैं तो यह एक विकासशील अर्थव्यवस्था का प्रतीक होगा। पर, यदि इस अक्ष पर केवल विलासिता की वस्तुएँ हों तो यह अर्थव्यवस्था में आय के असमान वितरण की ही जानकारी हमें दे पाएगा। इसी तरह जापान के उत्पादन बिंदु N_1, की व्याख्या भी अन्य सहायक जानकारी के आधार पर करना ही उचित होगा।

1.5.1 अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का अर्थ

रोटी, मक्खन, कमीज़, पैंट, स्कर्ट, पैन्सिल, कुर्सी, मेज, साइकिल, कार, घड़ी आदि भौतिक पदार्थों, जिनसे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, को हम वस्तुओं या चीज़ों का नाम देते हैं। ये मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के भौतिक माध्यम हैं। इनकी उत्पत्ति प्रकृति में उपलब्ध सामग्री का भौतिक, रासायनिक, जैविक, स्थैतिक और सामयिक परिवर्तन द्वारा संभव होती है। अक्सर हम वस्तुओं, उत्पादों तथा चीज़ों आदि शब्दों का अर्थ एक समान मानते हुए ही इनका प्रयोग करेंगे।

इन वस्तुओं/उत्पादनों/चीज़ों की तीन विशेषताएँ होती हैं:

i) इनकी भौतिक विशेषताएँ - ये किस प्रकार किसी मानवीय इच्छा की पूर्ति में सहायक हैं?

ii) वह समय (तिथि) जिस पर वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं - उदाहरण के लिए इस वर्ष उपलब्ध कार पिछले वर्ष उपलब्ध कार के अपेक्षा भिन्न मानी जाएगी, चाहे वह उसी नाम की कार हो।

iii) वह स्थान जहाँ पर ये वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। पैरिस में उपलब्ध कमीज़ दिल्ली में उपलब्ध कमीज़ से भिन्न मानी जाएगी।

बोध प्रश्न 3

1) एक उत्पादन संभावना वक्र अर्थव्यवस्था का चयन-पत्र है। यदि अर्थव्यवस्था के सीमित साधनों का पूर्ण प्रयोग हो रहा हो तो वह अर्थव्यवस्था उत्पादन संभावना वक्र पर कार्य करेगी या उसके भीतर?

.....

.....

.....

.....

.....

2) यदि संसाधनों की मात्रा बढ़ रही हो तो उत्पादन संभावना वक्र का क्या होगा? यह बाहर की तरफ खिसकेगा या अन्दर की तरफ?

.....

.....

.....

.....

.....

1.5.2 एक और व्याख्या

आइए, रोबिन्स की परिभाषा के और पहलू पर भी ध्यान दें : उन्होंने अर्थशास्त्र को एक विज्ञान माना है। अब प्रश्न यह है कि यह किस प्रकार का विज्ञान है? क्या हम इसे भौतिक अथवा रसायन शास्त्र की कोटि का विज्ञान कह सकते हैं? कदापि नहीं। अर्थशास्त्र तो मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है और यह व्यवहार काल एवं परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। इसीलिए अर्थशास्त्र को एक यथार्थ **(exact)** विज्ञान नहीं कहा जा सकता। किस स्थिति में मानव क्या व्यवहार करेगा– यह सुनिश्चित नहीं है। अतः प्राकृतिक घटनाक्रम का पूर्वानुमान लगाने की तुलना में मानवीय व्यवहार का पूर्वानुमान कर पाना कहीं अधिक कठिन होता है। आर्थिक घटनाक्रम की अपेक्षा प्राकृतिक घटनाक्रम की नियमित आवृति कहीं अधिक निश्चित मात्रा में व्यक्त करने योग्य, प्रदर्शनीय तथा मापे जाने योग्य होती है। अर्थशास्त्र एक विज्ञान भी है और कला भी। इसका संबंध उत्पादन, वितरण और उपभोग से जुड़ी मानवीय गतिविधियों से है, इस नाते यह एक उदार कला **(liberal art)** है। किंतु अर्थशास्त्र की कार्यविधि तथा निष्कर्ष पद्धति तो विज्ञान की कार्य शैली जैसी ही है। वैज्ञानिक कार्य पद्धति कैसी होती है? वैज्ञानिक पद्धति में वास्तविक जगत् के पदार्थों तथा घटनाक्रमों पर आधारित कुछ पूर्व धारणाएँ होती हैं और साथ ही एक मॉडल **(model)** होता है जो तर्क के आधार पर इन पदार्थों तथा घटनाक्रमों के बीच संबंध स्थापित करता है। इस मॉडल को पूर्व धारणाओं पर लागू कर कुछ निष्कर्ष निकाले जाते हैं जिन्हें नियमों की संज्ञा दी जाती है। अंत में पदार्थों के बारे में वास्तविक जानकारी प्राप्त कर इन नियमों की सत्यता की जाँच की जाती है।

बोध प्रश्न 4

1) यदि एक सेब ऊपर की ओर उछाला जाए तो वह हमेशा नीचे वापस आता है। यह पूर्वानुमान हमेशा शत प्रतिशत सही बैठता है। पर यदि सेब की कीमत कम की जाए तो क्या हमेशा ही लोग उसका अधिक उपभोग करेंगे? क्या इस विषय में भी आपका अनुमान सदा सत्य होगा?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अर्थशास्त्र किस दृष्टि से एक विज्ञान है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 वास्तविक तथा आदर्श अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के अध्ययन में सामान्यतः वास्तविक (positive) तथा आदर्श (normative) अर्थशास्त्र के बीच भेद किया जाता है।

वास्तविक अर्थशास्त्र आर्थिक विचारों और प्रश्नों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखता है। जैसे किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण किस तरह होता है या फिर, किसी फर्म में अथवा अर्थव्यवस्था में रोज़गार का स्तर किन बातों पर निर्भर करता है, कोई फर्म आगतों का अनुकूलतम सम्मिश्रण किस प्रकार तय करती है आदि। इन सभी प्रश्नों में किसी प्रकार का कोई नैतिक विवाद नहीं होता। इसके विपरीत **आदर्श अर्थशास्त्र में हम नैतिक विषयों पर ही चर्चा करते हैं।** जैसे किसी अर्थव्यवस्था में संसाधनों के बँटवारे का 'सबसे अच्छा' तरीका क्या हो? एक समाज अपनी राष्ट्रीय आय का आबंटन किस प्रकार करे? मुद्रा-स्फीति अच्छी होती है या बुरी? क्या अर्थव्यवस्था को श्रम की दृष्टि से पूर्ण रोज़गार स्तर पर ही कार्य करना चाहिए आदि। इन सभी मामलों में कहीं न कहीं मूल्य-मान अवश्य जुड़े होते हैं और यह मूल्य-मान विश्लेषक स्वयं ही निर्धारित करते हैं। इसी कारण ये मानदंड आदर्श कहलाते हैं। ये वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं कहे जा सकते। विश्लेषक इन सिद्धांतों को अपने वर्ग और विचारधारा के आधार पर बनाता है। इन सिद्धांतों में वैज्ञानिक प्रश्न नहीं उठाए जाते। इनमें पूर्व धारणाएँ तथा निष्कर्ष नैतिक आधार पर होती हैं। इन सिद्धांतों के पीछे पूर्व धारणाओं को स्वीकार (अस्वीकार) कर कोई भी इन पर आधारित निष्कर्षों को सहज ही स्वीकार या अस्वीकार कर सकता है। अर्थशास्त्र में विद्वानों के बीच में मतभेदों को दूर करना सामान्यतः संभव नहीं हो पाता क्योंकि इन सिद्धांतों में सभी पूर्व धारणाएँ तथा निष्कर्ष नैतिकता पर आधारित होती हैं। ऐसे मामलों में बिना किसी अंतिम फैसले पर पहुँचे कोई भी व्यक्ति चाहे जितनी देर विवाद कर सकता है। यही नहीं, नैतिक अवधारणाओं की सत्यता की जाँच आँकड़ों के आधार पर नहीं की जा सकती।

दूसरी ओर, यद्यपि वास्तविक अर्थशास्त्र में वैज्ञानिक प्रश्नों से ही वास्ता पड़ता है तथा वैज्ञानिक विधि से ही सिद्धांत बनाया जाता है, पर फिर भी अर्थशास्त्रियों के बीच मतभेद हो सकते हैं। ये मतभेद किसी समस्या विशेष के अध्ययन में मॉडल या सिद्धांत के चुनाव से जुड़े हो सकते हैं। किसी समस्या के प्रति अर्थशास्त्रियों के नज़रिये में अंतर भी मतभेद का कारण बन सकता है। पर इस प्रकार के मतभेदों को आँकड़ों के आधार पर इनकी सत्यता की जाँच कर सुलझाया जा सकता है। किसी भी सिद्धांत की आँकड़ों के आधार पर पुष्टि के दौरान भी आँकड़ों की उपयुक्तता को लेकर मतभेद हो सकते हैं फिर चाहे वह अर्थशास्त्र हो या भौतिकशास्त्र। प्राकृतिक विज्ञान में तो प्रयोगशाला में परीक्षणों द्वारा आँकड़ों को इकट्ठा किया जा सकता है। किंतु अर्थशास्त्र में तो हमें अपूर्ण सांख्यिकीय विधियों के सहारे ही आवश्यक जानकारी का संग्रह करना पड़ता है। इसलिए एक ही समस्या के अध्ययन में दो वास्तविक अर्थशास्त्रियों के निष्कर्ष अलग-अलग हो सकते हैं। अन्ततः इन मतभेदों का निपटारा सिद्धांतों को आँकड़ों की कसौटी पर कसकर ही हो पाता है।

बोध प्रश्न 5

1) निम्नांकित वाक्यांशों को ध्यान से पढ़ें और यह बताएँ कि इनमें से कौन-सा वास्तविक तथा कौन-सा आदर्शी है?

   क) अर्थव्यवस्था में बेरोज़गारी कम की जानी चाहिए;

   ख) भारत का भुगतान-शेष संतुलन में नहीं है;

   ग) निवेश का निर्धारण आय द्वारा होता है;

   घ) स्फीति पर नियंत्रण रखना चाहिए;

   ङ) भारतीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र का होना वांछनीय नहीं है;

   च) कीमतों पर नियंत्रण होना ही चाहिए;

   छ) राशन व्यवस्था से कार्यकुशलता/दक्षता कम हो जाती है;

   ज) भारत पेट्रोल का आयात भी करता है, निर्यात भी;

   झ) भारत एक गरीब देश है; तथा

   ञ) विषमता कम करनी चाहिए।

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में हमने एक अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याओं के बारे में बातचीत की है। हम किसी भी काल में या समाज में हों, हमें संसाधनों को मितव्ययता से प्रयोग करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। हमारी इच्छाएँ असीमित ही रहती हैं क्योंकि सामाजिक विकासक्रम नई-नई इच्छाओं-आवश्यकताओं को जन्म देता रहता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। किंतु साधनों की सीमित मात्रा के कारण हम किसी भी समय केवल कुछ ही इच्छाओं की तुष्टि कर पाते हैं– सभी की संतुष्टि हो नहीं पाती। यह बात व्यक्ति के लिए भी उतनी ही सही है जितनी कि किसी सामाजिक परिवारों में रहने वाले समूह के लिए। इसी कारण से लॉयनल रॉबिन्स की अर्थशास्त्र की परिभाषा अपने आप में बहुत सटीक बन जाती हे। अर्थशास्त्र 'मितव्ययता' से जुड़ा है। साधनों की सीमितता तथा इच्छाओं की असीमितता दुर्लभता को जन्म देती है। इसी से अर्थशास्त्र की मूलभूत समस्या अर्थात् साधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच में ऐसे उपयुक्त चयन की समस्या पैदा होती है कि मनुष्य की असीमित इच्छाओं में से कुछ की संतुष्टि की जा सके। दुर्लभता गरीब तथा संपन्न देशों पर समान रूप से लागू होती है। भारत में यदि जरूरतों के हिसाब से साधन सीमित लगते हैं तो संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अमीर देश में भी साधन अपर्याप्त ही रहते हैं। हाँ, यह बात अवश्य सच है कि दोनों देशों में इच्छाओं और साधनों के स्वरूप काफी अलग-अलग हो सकते हैं। चयन की समस्या एक उत्पादन संभावना वक्र से समझाई जा सकती है। साधनों एवं इच्छाओं के असंतुलन से ही केंद्रीय समस्याएँ पैदा होती हैं:

i) सीमित साधनों से किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए? अर्थव्यवस्था खाद्य सामग्री का अधिक उत्पादन करे या महँगी कारों का? निर्यात के लिए ज्यादा उत्पादन हो या घरेलू उपभोग के लिए?

ii) वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाए? अर्थात् मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सीमित साधनों का संयोजन किस प्रकार किया जाए? यह बात उत्पादन की तकनीक से जुड़ी है। इसका एक उदाहरण है : श्रम प्रधान तकनीक का प्रयोग हो या फिर पूँजी-प्रधान तकनीक का?

iii) उत्पादन किनके लिए हो? वस्तुओं का उत्पादन करने के बाद भी उनके आबंटन का प्रश्न बचा रहता है– अर्थात् उपभोक्ताओं में वस्तुएँ कैसे बाँटी जाएँ– अमीरों को अधिक वस्तु मिले या गरीबों को।

ये ऐसी मूलभूत समस्याएँ है जिनसे सभी अर्थव्यवस्थाओं को जूझना पड़ता है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था अपनी संस्थागत रचना के अनुरूप इनके समाधान भी खोज लेती है। अतः कही स्वतंत्र बाजार व्यवस्था, कहीं केंद्रीय आयोजन तो कहीं बाजार एवं आयोजन की मिलीजुली व्यवस्था से आर्थिक समस्याओं का निदान किया जाता है।

इस इकाई के अंत में हमने वास्तविक तथा आदर्श अर्थशास्त्र के भेद पर चर्चा की है। जहाँ वास्तविक अर्थशास्त्र किसी वस्तु की कीमत के निर्धारण जैसी समस्याओं से संबद्ध है वहीं आदर्श अर्थशास्त्र का वास्ता नैतिकता, वांछनीयता आदि के सवालों से पड़ता है। जैसे अर्थव्यवस्था में मजदूरी की उचित दर क्या हो? प्रत्यक्ष अर्थशास्त्र में मूल्य-मानों के लिए कोई स्थान नहीं होता पर आदर्शी स्वरूप में तो सभी कुछ व्यक्ति मूल्य-मानों पर ही आधारित रहता है। ये मूल्यमान भी अंततः किसी समाज में व्यक्ति की अपनी स्थिति तथा विचारधारा पर ही निर्भर रहते हैं।

1.8 शब्दावली

अर्थशास्त्र : अंग्रेजी शब्द इक्नॉमिक्स ग्रीक भाषा का है– इसका अर्थ है 'घर' और 'कानून'। अर्थात् गृह प्रबंध का सिद्धांत। क्योंकि संसाधन सीमित हैं और इच्छाएँ अतः अर्थशास्त्र का संबंध साधनों के किफायतपूर्ण उपयोग से है।

आदर्श अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र का यह स्वरूप नैतिक पहलूओं, प्रश्नों और समस्याओं से जुड़ा हुआ है। इसमें 'क्या बेरोज़गारी भत्ता दिया जाना चाहिए? अथवा 'क्या सरकार को कीमत नियंत्रण लागू करना चाहिए'? जैसे प्रश्नों पर विचार किया जाता है।

वास्तविक अर्थशास्त्र : इस स्वरूप में अर्थशास्त्र वैज्ञानिक व्यवहार से जुड़े प्रश्नों का विश्लेषण करता है– अर्थात् किन वस्तुओं का, कैसे उत्पादन किया जाए? यहाँ बिना मूल्य-मानों की चिन्ता किए ही इन प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

आवश्यकताएँ : वस्तुओं और सेवाओं को पाने की इच्छा। जब व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ खर्च करने का तत्पर हो जाता है तो यही आवश्यकता 'माँग' का रूप धारण कर लेती है।

उत्पादन संभावना/सीमा वक्र	:	उन सभी उत्पाद संयोजनों का समूह जो एक फर्म या अर्थव्यवस्था कुशलतम तकनीक तथा संसाधनों के कुशलतम बँटवारे के आधार पर उत्पादन कर सकती है।
उद्यम अथवा फर्म	:	बाज़ार में विक्रय हेतु वस्तुओं तथा सेवाओं आदि का उत्पादन करने वाले संगठन को फर्म या उद्यम का नाम दिया जाता है। यह संगठन संसाधन खरीदकर उनके माध्यम से उत्पादन करता है तथा उत्पादित वस्तुओं आदि की बाज़ार में बिक्री करता है। इस कार्य से जुड़े जौखिमों का वहन भी यही संगठन करता है। संगठन की आंतरिक गतिविधियाँ श्रम के विभाजन तथा पारस्परिक सहयोग पर आधारित होती हैं।
दुर्लभता	:	मानवीय आवश्यकताओं का उपलब्ध सामग्री से अधिक होना ही दुर्लभता को जन्म देता है। यह आवश्यकताओं तथा साधनों के असंतुलन से होती है। दुर्लभता तुलनात्मक अर्थ में ही होती है।
ध्येय	:	आर्थिक गतिविधियों में संलग्न व्यक्तियों के लक्ष्य।
पूँजी	:	इसमें सभी मानव निर्मित उत्पादन साधन आते हैं। यह समाज के उत्पादन का वह हिस्सा होता है जो भविष्य में उत्पादक कार्यों में प्रयोग के लिए अलग रख दिया जाता है। इसमें मशीनें, संयंत्र, भवन आदि सम्मिलित होते हैं।
भूमि	:	यह एक ऐसा उत्पादन साधन है जिसमें हम सभी प्रकृति से मिले सभी संसाधनों को शामिल करते हैं।
साधन	:	ध्येय की प्राप्ति में सहायक संसाधन।
श्रम	:	उत्पादन साधन के रूप में मनुष्य की सभी मानसिक व शारीरिक शक्तियाँ।
वस्तुएँ	:	मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के भौतिक साधनों को हम वस्तुएँ कहते है। अर्थशास्त्र में चीज़ों, वस्तुओं, उत्पादों आदि शब्द एक-दूसरे पर्याय के रूप में प्रयोग होते हैं।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Begg, D.R., Dornbusch, S.Fischer(1991), *Macroeconomics* (4th Edition), McGraw-Hill Book Co. New York

Lipsey, Richard (1997), *Introduction to Positive Economics* (8th Edition). Oxford University Press (ELBS Edition), London

Nicholson, W.(1995), *Intermediate Micro Economics* (VIth Edition), Dryden Press, New York.

Roychoudhry, Kalyanjit (1999), *Modern Microeconomics* (II Edition), Book Land, Delhi

Salvatore D.(1996), *Micro Economic Theory* (Schaum series 3rd Edition), McGraw-Hill Book Co., New York.

Salvatore D.(1995), *Micro Economics* (2nd Edition), Harper Collins Publishers, New York

Trearthen Timothy (1996), *Micro Economics,* (1st Edition, 1996) Macmillan, New York.

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

बोध प्रश्न 1

1) कुछ आवश्यक खाद्य सामग्री, जैसे दूध, अनाज, तेल, दालें, सब्जियाँ, कपड़े तथा रहने को कोई कमरा। एक हजार रुपये की राशि अपेक्षाकृत एक छोटी सी रकम है। इसमें आपको आवश्यक वस्तुएँ प्रचुरता से नहीं मिल पाएगी। किस वस्तु की कितनी मात्रा आप प्रयोग करेंगे यह तो मूलतः आपकी अपनी उपयोग संबंधी आदतों पर निर्भर करेगा।

2) बीज, खाद्य/उर्वरक, निश्चित मात्रा में पानी, कुछ श्रमिक तथा संभवतः कुछ औज़ार।

बोध प्रश्न 2

1) इच्छाएँ असीमित पर संसाधन सीमित है, अतः सभी इच्छाओं को एक साथ पूरा नहीं किया जा सकता। इसीलिए आवश्यकताओं के बीच प्राथमिकता निश्चित करनी ही पड़ती है। हाँ, संसाधनों को कई तरह से प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जिस भूमि पर धान की खेती होती है उसी पर हम चाहे तो कोई व्यवसायिक फसल भी उगा सकते हैं। यदि संसाधन किसी वस्तु विशेष कर ही उत्पादन करने योग्य हों तो फिर चयन करने का कोई अर्थ नहीं रहता।

2) आप सार्वजनिक बसों, अपनी साइकिल या मोटर साइकिल तथा यदि पैसा हो तो कार या टैक्सी का प्रयोग कर सकते है। कई नगरों में लोग स्थानीय रेलों, ट्रामों, यहाँ तक कि जलमार्गों का भी प्रयोग करते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) एक बेरोज़गार व्यक्ति कुछ भी उत्पादन नहीं करता, किंतु अन्य रोज़गार प्राप्त व्यक्ति कुछ न कुछ तो उत्पादन करता ही है, चाहे यह उसके संभाव्य या अधिकतम उत्पादन से कम हो।

2) यदि संसाधनों में वृद्धि हो तो दोनों ही वस्तुओं का अधिक उत्पादन संभव हो सकता है। उत्पादन संभावना वक्र बाहर की ओर खिसकेगा। हाँ, प्रयुक्त होने वाले तकनीकों, साधन उपलब्धि में सापेक्ष परिवर्तनों एवं उनकी प्रयोग कुशलता के प्रभाव अवश्य पड़ते हैं।

बोध प्रश्न 4

1) भौतिक तथा अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति अर्थशास्त्र एक निश्चित विज्ञान नहीं है। मानवीय व्यवहार में प्रकृति की भाँति पुनरावृति इतनी 'सुनिश्चित' नहीं होती। घटनाक्रम एक होने पर भी विभिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहार में अंतर हो सकता है। अतः कोई भी शत-प्रतिशत आश्वस्त नहीं हो सकता कि सेब के दाम कम होने पर इनकी माँग में अवश्य ही वृद्धि होगी।

2) विश्लेषण अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रणाली के प्रयोग करने के अर्थ में भाग 1.5.2 के रेखाचित्र को एक बार फिर ध्यान से देखें।

बोध प्रश्न 5

1) (क) आदर्शी (ख) वास्तविक (ग) वास्तविक (घ) आदर्शी (ङ) आदर्शी
(च) आदर्शी (छ) वास्तविक (ज) वास्तविक (झ) वास्तविक (ञ) आदर्शी।